

मणिपुरी



यह नृत्य महाकाव्यों, 'रामायण' और 'महाभारत' से प्रकट हुआ है, जहाँ मणिपुर के देशी नृत्य विशेषज्ञों को 'गंधर्व' कहा गया।

गंधर्व देवी-देवताओं के साथ जुड़े गायक, नर्तक और संगीतकार होते थे।

इस नृत्य की उत्पत्ति मणिपुर की घाटियों में शिव और पार्वती के नृत्य से जुड़ी हुई है।

उद्भव



२०वीं शताब्दी में, रवींद्रनाथ टैगोर के प्रयासों से इस नृत्य शैली की लोकप्रियता में वृद्धि हुई। उल्लेखनीय है कि इस दौरान रवींद्रनाथ टैगोर ने शांतिनिकेतन में इसे प्रचलित किया।

१५वीं शताब्दी में वैष्णववाद के आगमन के साथ, राधा और कृष्ण के जीवन पर आधारित रचनाएँ प्रस्तुत की गयीं।



प्रमुख विशेषताएँ

इस नृत्य में तांडव और लास्य दोनों का समावेश होता है, परन्तु लास्य अधिक महत्वपूर्ण है।

मणिपुरी नृत्य में मुद्राओं का सीमित उपयोग होता है। अधिकांश अभिव्यक्ति सम्पूर्ण शारीरिक हाव-भाव के माध्यम से व्यक्त की जाती हैं।

प्रस्तुतीकरण के दौरान, 'पुंग' का प्रयोग करताल और ढोल आदि के साथ किया जाता है। 'पुंग' एक प्रकार का ड्रम होता है।

नागाभान्द्रा मुद्रा एक महत्वपूर्ण आसन है, जिसमें नर्तकी का शरीर '8' के आकार में वक्रता के माध्यम से जुड़ा हुआ होता है।

कामुकता के बजाय भक्ति पर ध्यान केंद्रित करना इस नृत्य की एक अनोखी विशेषता है।

रासलीला, संकीर्तन और थांगटा मणिपुरी नृत्य के सबसे लोकप्रिय विषय हैं।

प्रसिद्ध कलाकार



गुरु बिपिन



बिम्बावती देवी



झावेरी बहनें (नयना, रंजना, सुवर्णा और दर्शना)